मीडिया की छह मानक प्रणालियों की वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

मीडिया के मानक सिद्धांत (Normative Theories of Media) इस बात की व्याख्या करते हैं कि किसी समाज में मीडिया को कैसे कार्य करना चाहिए। फ्रेड सीबर्ट और उनके साथियों द्वारा 1956 में दी गई चार मूल प्रणालियों के बाद, इसमें समय के साथ संशोधन हुए।

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में, जहाँ डिजिटल क्रांति और सोशल मीडिया का बोलबाला है, इन प्रणालियों की प्रासंगिकता और उनकी चुनौतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण निम्नलिखित है:

1. सत्तावादी प्रणाली (Authoritarian Theory)

इस प्रणाली में मीडिया सरकार के अधीन होता है।

* प्रासंगिकता: आज भी कई देशों (जैसे उत्तर कोरिया, म्यांमार) में यह पूरी तरह सक्रिय है।

* आलोचनात्मक विश्लेषण: आधुनिक युग में 'फायरवॉल' और इंटरनेट सेंसरशिप के माध्यम से डिजिटल सत्तावाद बढ़ा है। हालांकि, सोशल मीडिया ने इसे चुनौती दी है, लेकिन सरकारों ने 'निगरानी सॉफ्टवेयर' (Surveillance) के जरिए नियंत्रण और कड़ा कर लिया है।

2. उदारवादी प्रणाली (Libertarian Theory)
इसे 'मुक्त प्रेस' का सिद्धांत भी कहते हैं, जहाँ मीडिया पूरी तरह स्वतंत्र होता है।
* प्रासंगिकता: यह पश्चिमी लोकतंत्रों का आधार है।
* आलोचनात्मक विश्लेषण: वर्तमान में यह "फेक न्यूज" और "सनसनीखेज पत्रकारिता" (Clickbait) का शिकार हो गई है। बिना किसी नियंत्रण के, लाभ कमाने की होड़ ने पत्रकारिता की गुणवत्ता को गिरा दिया है।
3. सामाजिक उत्तरदायित्व प्रणाली (Social Responsibility Theory)
यह उदारवाद का सुधरा हुआ रूप है, जो स्वतंत्रता के साथ जिम्मेदारी की बात करता है।
* प्रासंगिकता: भारत जैसे देशों में प्रेस काउंसिल और स्व-नियमन इसी पर आधारित हैं।
* आलोचनात्मक विश्लेषण: वर्तमान 'कॉर्पोरेट स्वामित्व' (Corporate Ownership) के कारण यह प्रणाली खतरे में है। मीडिया संस्थान जनहित के बजाय अपने मालिकों के व्यावसायिक हितों को प्राथमिकता दे रहे हैं।
4. सोवियत कम्युनिस्ट प्रणाली (Soviet Media Theory)
मीडिया का उपयोग राज्य निर्माण और पार्टी की विचारधारा के प्रचार के लिए।
* प्रासंगिकता: सोवियत संघ के पतन के बाद इसका प्रभाव कम हुआ, लेकिन चीन का मीडिया मॉडल इसी का एक आधुनिक, तकनीकी रूप है।
* आलोचनात्मक विश्लेषण: यहाँ मीडिया केवल 'राज्य का मुखपत्र' बनकर रह जाता है, जिससे वैकल्पिक विचारों का गला घोंट दिया जाता है।